चाणक्य नीति

सुव्यवस्थित व्यक्ति और समाज के निर्माण हेतु उपयोगी पुस्तक

प्रो. श्रीकान्त प्रसून



वी एण्ड एस पब्लिशर्स

प्रकाशक

वी एण्ड एस पब्लिशर्स

मुख्य कार्यालय
F-2/16, अंसारी रोड, दरियागंज,
नई दिल्ली-110002 ☎ 23240026, 27, 28
✉ info@vspublishers.com
🌐 www.vspublishers.com

क्षेत्रीय कार्यालय : हैदराबाद
5-1-707/1, ब्रिज भवन (सेन्ट्रल बैंक ऑफ इण्डिया
लेन के पास) बैंक स्ट्रीट, कोटी, हैदराबाद-500 095
☎ 040-24737290
✉ vspublishershyd@gmail.com

Online Brandstore: amazon.in/vspublishers

पुस्तकें ऑलाइन खरीदें: amazon Flipkart | फ़ॉलो करें :

© कॉपीराइट: वी एण्ड एस पब्लिशर्स

ISBN 978-93-498390-5-2
नवीन संस्करण

अस्वीकरण

इस पुस्तक में सटीक समय पर जानकारी उपलब्ध कराने का हर संभव प्रयास किया गया है। पुस्तक में संभावित त्रुटियों के लिए लेखक और प्रकाशक किसी भी प्रकार से जिम्मेदार नहीं होंगे। पुस्तक में प्रदान की गयी पाठ्य सामग्रियों की व्यापकता या सम्पूर्णता के लिए लेखक या प्रकाशक किसी प्रकार की वारंटी नहीं देते हैं।

पुस्तक में प्रदान की गयी सभी सामग्रियों को व्यावसायिक मार्गदर्शन के तहत सरल बनाया गया है। किसी भी प्रकार के उद्धरण या अतिरिक्त जानकारी के स्रोत के रूप में किसी संगठन या वेबसाइट के उल्लेखों का लेखक या प्रकाशक समर्थन नहीं करता है। यह भी संभव है कि पुस्तक के प्रकाशन के दौरान उद्धृत बेवसाइट हटा दी गयी हो।

इस पुस्तक में उल्लिखित विशेषज्ञ के राय का उपयोग करने का परिणाम लेखक और प्रकाशक के नियंत्रण से हटकर पाठक की परिस्थितियों और कारकों पर पूरी तरह निर्भर करेगा।

पुस्तक में दिये गये विचारों को आजमाने से पूर्व किसी विशेषज्ञ से सलाह लेना आवश्यक है। पाठक पुस्तक को पढ़ने से उत्पन्न कारकों के लिए पाठक स्वयं पूर्ण रूप से जिम्मेदार समझा जायेगा।

उचित मार्गदर्शन के लिए पुस्तक को माता-पिता एवं अभिभावक की निगरानी में पढ़ने की सलाह दी जाती है। इस पुस्तक के खरीददार स्वयं इसमें दिये गये सामग्रियों और जानकारी के उपयोग के लिए सम्पूर्ण जिम्मेदारी स्वीकार करते हैं।

इस पुस्तक की सम्पूर्ण सामग्री का कॉपीराइट लेखक/प्रकाशक के पास रहेगा। कवर डिजाइन, टेक्स्ट या चित्रों का किसी भी प्रकार का उल्लंघन किसी इकाई द्वारा किसी भी रूप में कानूनी कार्रवाई को आमंत्रित करेगा और इसके परिणामों के लिए जिम्मेदार समझा जायेगा।

मुद्रक : परम ऑफसेटर्स, ओखला, नई दिल्ली-110020

प्रकाशकीय

हमें अपने पाठकों की सेवा में यह अनमोल कृति **'चाणक्य नीति'** भेंट करते हुए अपार हर्ष एवं गर्व का अनुभव हो रहा है। यह पुस्तक ज्ञान एवं शिक्षा का भण्डार है। इसे पढ़कर पाठक अपने जीवन की दिशा बदल सकते हैं। इस पुस्तक में यथासाध्य आधुनिक व्यवस्था के अनुरूप शब्दों एवं विचारों को प्रस्तुत किया गया है। इसे पढ़कर पाठक आसानी से चाणक्य के पथ–निर्देशित विचारों एवं भावों को हृदयंगम कर सकेंगे।

प्रस्तुत पुस्तक में चाणक्य नीति की विशद व्याख्या सरल हिन्दी में किया गया है। वैसे 'चाणक्य नीति' भारतीय इतिहास की एक अनमोल धरोहर है। इसमें कुल सत्रह अध्याय हैं। 'चाणक्य नीति', महापण्डित चाणक्य द्वारा उनके विशाल एवं विख्यात ग्रन्थ ''कौटिल्य अर्थशास्त्र'' से उन्हीं के द्वारा अलग किये गये सत्रह अध्यायों पर आधारित ग्रन्थ रचना है। जिसे चाणक्य ने अलग से 'चाणक्य नीति' नाम दिया। इस ग्रन्थ की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें सिद्धान्त और व्यवहार का, आदर्श और यथार्थ का तथा ज्ञान और क्रिया का सुन्दर समन्वय है।

सम्पूर्ण पुस्तक सरल और सुबोध हिन्दी में प्रस्तुत की गयी है, ताकि प्रत्येक जन साधारण इसे पढ़कर लाभान्वित हो सके। आप जितनी अभिरुचि एवं मनोयोग से इसका अध्ययन करेंगे, इसमें आपको उतना ही आनन्द तथा ज्ञान में वृद्धि होगी।

–प्रकाशक

विषय-सूची

सुव्यवस्थित व्यक्ति और समाज, सम्पूर्ण चाणक्य नीति

अध्याय एक 9
अध्याय दो 12
अध्याय तीन 15
अध्याय चार 18
अध्याय पाँच 22
अध्याय छः 25
अध्याय सात 28
अध्याय आठ 31
अध्याय नौ 35
अध्याय दस 38
अध्याय ग्यारह 42
अध्याय बारह 45
अध्याय तेरह 49
अध्याय चौदह 52
अध्याय पन्द्रह 55
अध्याय सोलह 58
अध्याय सत्रह 62

सुव्यवस्थित व्यक्ति और समाज
सम्पूर्ण चाणक्य नीति

अध्याय पहला
अध्याय दूसरा
अध्याय तीन
अध्याय चार
अध्याय पाँच
अध्याय छः
अध्याय सात
अध्याय आठ
अध्याय नौ
अध्याय दस
अध्याय ग्यारह
अध्याय बारह
अध्याय तेरह
अध्याय चौदह
अध्याय पन्द्रह
अध्याय सोलह
अध्याय सत्रह

1

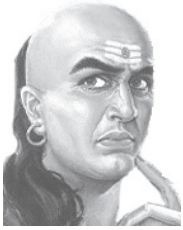

अध्याय एक

१. प्रणम्य शिरसा विष्णुं त्रैलोक्याधिपतिं प्रभुम्।
नाना शास्त्र उक्त उद्धृतं वक्ष्ये राजनीति समुच्चयम्।

तीनों लोकों, पृथ्वी, अन्तरिक्ष और पाताल, के स्वामी सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापक परमेश्वर विष्णु को सिर झुकाकर नमन करने के पश्चात् अनेक शास्त्रों से एकत्र किये गये इस राजनीतिक ज्ञान का वर्णन करता हूँ।

२. अधीत्येदं यथाशास्त्रं नरो जानाति सत्तमः।
धर्म उपदेश विख्यातं कार्य-अकार्यं शुभ-अशुभम्।

श्रेष्ठ पुरुष इस शास्त्र का विधिवत् अध्ययन करके धर्मशास्त्रों के करणीय, अकरणीय तथा शुभ या अशुभ फल देने वाले कर्मों को समझ जायेंगे।

३. तद् अहं सम् प्रवक्ष्यामि लोकानां हित काम्यया।
यस्य विज्ञान मात्रेण सर्वज्ञत्वं प्रपद्यते।

इसलिए मैं मानव के कल्याण की कामना से इस ज्ञान का वर्णन कर रहा हूँ कि मनुष्य सर्वज्ञ हो जाये।

४. मूर्ख शिष्य उपदेशेन दुष्ट स्त्री भरणेन च
दुःखितैः सम्प्रयोगेण पण्डितो अपि अवसीदति ।

मूर्ख शिष्य को उपदेश देने, दुष्ट स्त्री का पालन–पोषण करने, धन के नष्ट होने से और दुःखी व्यक्ति के साथ व्यवहार रखने से बुद्धिमान व्यक्ति को भी कष्ट उठाना पड़ता है।

५. दुष्टा भार्या शठं मित्रं भृज्यः च उत्तरदायकः।
ससर्पे च गृहे वासो मृत्युरेव न संशयः।

दुराचारिणी स्त्री, दुष्ट स्वभाव वाला मित्र और सामने बोलने वाले नौकर के साथ रहना या सर्प से भरे घर में निवास से मृत्यु निश्चित है।

६. आपदर्थे धनं रक्षेद् दारा रक्षे धनैः अपि।
आत्मानं सततं रक्षेद् दारैः अपि धनैः अपि ।

विपत्ति काल से बचने के लिए धन की रक्षा करनी चाहिए। धन देकर भी पत्नी की रक्षा करनी चाहिए। धन और पत्नी द्वारा भी अपनी रक्षा सदा करनी चाहिए ।

७. आपदर्थे धनं रक्षेद्-इमतां कुत आपदः।
कदाचिद् चलिता लक्ष्मीः संचितो अपि विनश्यति।

विपत्ति के समय के लिए धन बचाना चाहिए क्योंकि जिसके पास धन होता है, उसे किसी भी विपत्ति से बचना आसान होता है, किन्तु यह स्मृति में रखने की बात है कि संचित धन भी चंचला लक्ष्मी के कारण नष्ट हो जाता है।

८. यस्मिन् देशे न सम्मानो न वृत्तिः च बान्धवा।
न च विद्या आगमः कश्चित् तं देशं परिवर्जयेत्।

जिस देश में आदर सम्मान नहीं मिले, जहाँ आजीविका का साधन न हो, कोई बन्धु–बान्धव न हों, उस देश को त्याग देना चाहिए।

९. धनिकः श्रोत्रियो राजा नदी वैद्यस्तु पंचमः।
पंच यत्र न विद्यन्ते न तत्र दिवसं वसेत्।

जहाँ धनी, वेद को जानने वाला ब्राह्मण, राजा, नदी और वैद्य, ये पाँच न हों, वहाँ एक दिन भी नहीं रहना चाहिए।

१०. लोकयात्रा भयं लज्जा दाक्षिण्यं त्यागशीलता।
पंच यत्र न विद्यन्ते न कुर्यात् तत्र संस्थितम्।

जहाँ जीवन चलाने के लिए आजीविका का साधन न हो; किसी प्रकार के दण्ड का भय न हो; लोकलाज न हो; व्यक्ति अपने कार्यों में कुशल न हों; दान देने की प्रवृत्ति न हो, वहाँ व्यक्ति को निवास नहीं करना चाहिए।

११. जानीयात् प्रेषणे भृत्यान् बान्धवान् व्यसन आगमे।
मित्रं च आपत्ति-कालेषु भार्यां न विभवक्षये।

काम लेने पर नौकर–चाकर की; व्यसन आने पर बन्धु–बान्धव की, विपत्ति के समय मित्र की और धननाश के समय पत्नी की परीक्षा हो जाती है।

१२. आतुरे व्यसने प्राप्ते दुर्भिक्षे शत्रु-संकटे।
राजद्वारे श्मशाने च यः तिष्ठति स बान्धवः।

रोग से पीड़ित होने पर; दुःख आने पर; अकाल पड़ने पर; शत्रु की ओर से संकट आने पर; राज्य सभा में और श्मशान में जो साथ देता है, वही बन्धु है।

१३. यो ध्रुवाणि परित्यज अध्रुवं परिषेवते।
ध्रुवाणि तस्य नश्यन्ति अध्रुवं नष्टमेव च।

निश्चित को छोड़कर जो व्यक्ति अनिश्चित में लगा रहता है, उसका निश्चित भी नष्ट हो जाता है, अनिश्चित तो नष्ट है ही।